Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 7, Issue 12, November 2018
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

छत्तीसगढ़ी लोकनृत्यों की परंपरा में पंथी नृत्य

डॉ. श्रीमती गायत्री साहू
दुर्ग छत्तीसगढ़

सारांश

लोक गीत के सदृश छत्तीसगढ़ लोक नृत्य कला भी अति प्राचीन हैं नृत्यों का विकास लोक–जीवन से ही होता हैं नृत्य ही लोक जीवन में भाव–प्रदर्शन का एक मात्र साधन हैं जिस प्रकार लोक जीवन निर्बन्ध एवं स्वच्छन्द है, उसी प्रकार लोक नृत्य यहाँ के लोक–जीवन में एक साम्य हैं छत्तीसगढ़ के नृत्य अपनी शैली विशेष का अनुशरण करते हुए परम्परा से चले आ रहे हैं छत्तीसगढ़ी नृत्य आदिम जातीय परम्परा के अनुसार वृत्ताकार अथवा गोल चक्कर के होते हैं पहिले दाहिने पैर उठते हैं, फिर बायें पैर तत्काल साथ–साथ बाजे या ताल के बोल या स्वर पर नृत्य का रूप बनता हैं ताल की भिन्नता से नृत्य का भेद होता हैं 1.

प्रस्तावना– छत्तीसगढ़ी संगीत और नृत्य में यथा मांदर, डफरा, झांझ डंडा, बांस, बांसुरी और घुंघरू आदि को उपयोग में लाते हैं संगीत और नृत्य की गोष्ठी और समागम गाँव–गाँव बाहरो मास चलता हैं छत्तीसगढ़ी लोक नृत्यों में सुआ नृत्य, मड़ई, करगा, डंडा आदि है, ये सामूहिक नृत्य हैं पंथी, देवार नाचा आदि में पुरुष और स्त्री सम्मिलित होकर नृत्य करते हैं छत्तीसगढ़ी संगीत और नृत्य की परम्परा लोक कला की बहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत करती है सुआ नृत्य स्त्रियों का नृत्य हैं इसमें स्त्रियाँ वृताकार गोल चक्कर में तालियाँ बजाती हुई गीत गाती हैं मड़ई छत्तीसगढ़ का एक जातीय नृत्य हैं मड़ई को छत्तीसगढ़ का शारदोत्सव भी कहा जा सकता हैं मड़ई मुख्य रूप रावत यादव जाति के लोग विशेष उल्लास से मनाते हैं नृत्यत्व शास्त्रियों का अनुमान है कि मड़ई कृषि सभ्यता की देन हैं कृषि कार्य प्रारंभ करने के पहले उत्पादन की वृद्धि के लिए वर्षा नृत्य तथा बसंत नृत्य हुआ करते थें कृषि नृत्य में मड़ई तथा बसंत नृत्य में करमा तथा डंडा मुख्य हैं मड़ई फसलें काटने के बाद प्रत्येक गाँव में लोक नृत्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं पंथी नृत्य छत्तीसगढ़ की सतनामी जाति विशेष का नृत्य हैं इसमें मुख्य रूप से गुरू घासीदास जी के व्यक्तित्व–कृतित्व के अलौकिक चित्रण का गान करते हुए नृत्य किये जाते हैं प्राचीन काल में पंथी नृत्य में मांदर, मंजीरा, झांझ के स्वरों के ताल पर नृत्य होता है डंडा नृत्य में लकड़ी के टुकड़ों को आपस में जोड़ कर स्वर निकाला जाता है, और उसी के ताल पर नृत्य किया जाता है। धार्मिक नृत्यों के अंतर्गत जंवारा तथा माता सेवा के नृत्य प्रधान हैं ये देव नृत्य हैं ये देवी–देवताओं की पूजा से संबंधित होते हैं छत्तीसगढ़ी लोक–जीवन में जनता के आमोद–प्रमोद से संबंधित नृत्य प्रायः मंगल अवसरों या पर्वों पर कराए जाते हैं यथा देवार नृत्य, गम्मत नृत्य, सोहर नृत्य एवं नचौरी नृत्य आदिं।

पंथी–नृत्य–पंथी गीत एक प्रकार का लोक नृत्य–गीत कहा जा सकता हैं पंथी नृत्य सतनामी जाति का परम्परागत नृत्य हैं माघ माह को गुरू घासदास जी की जन्म तिथि के अवसर पर सतनामी 'जैतखंभ' को स्थापित कर पूजन अर्चन करते हैं साथ ही उसके इर्द–गिर्द एक गोल घेरे में गीत गाते हुए नृत्य करते हैं पंथी नृत्य का प्रारंभ देवताओं की स्तुति से होता है इन गीतों का प्रमुख विषय गुरु घासीदास का चरित्र होता हैं इन गीतों में मनुष्य जीवन की महत्ता के कारण आध्यात्मिक संदेश भी होता है जिसपर निर्गुण भक्ति का गहरा रंग हैं पंथी नृत्य आरंभ में मध्यम एवं धीरे होता है, किन्तु वाद्य एवं भाव दोनों के द्वारा यह क्रमशः अपनी चरम सीमा पर पहुंचता हैं मांदर की थाप के साथ–साथ यह नृत्य होता हैं पंथी नृत्य गीत में पद संचालन का विशेष महत्व होता हैं इसमें प्रायः पुरूष भाग लेते हैं पंथी गीत गायक एक वृत्ताकार घेरा बनाकर एक दूसरे के कंधों में हाथ डालकर धीमें व सरल पद संचालन के साथ गीत आरंभ करते हैं मुख्य गायक एवं वादक वृत्त के अंदर रहते हैं, वृत्त के मध्य में स्थित मुख्य गायक गीत के पंक्ति कहता है, जिसे वृत्त के अन्य लोग दुहराते हैं अंग–प्रत्यंगों के संतुलित संचालन के द्वारा ये लोक नृत्य के माध्यम से लहरों की भाँति प्रभाव उत्पन्न करते हैं नृत्य को तीव्रता के साथ ही पंथी गीत का आकर्षण भी बढ़ता जाता हैं मुख्य गायक के पास एक 'सिटी' होती है, जिसका प्रयोग मिनट बजने के बाद नर्तकगण अपने पद–संचालन एवं भंगिमाओं में परिवर्तन लाते हैं, पंथी नृत्य मैं आजकल सिटी की भूमिका प्रमुख रूप से होने लगी हैं पंथी नृत्य प्रायः वृत्ताकार होता है, किन्तु कभी–कभी यह आवश्यक नहीं होतां गीत को इच्छानुसार घटाया बढ़ाया जाता हैं कहीं–कहीं अपनी ओर से साहब बाबा गुरू आदि शब्दों को जोड़ लिया जाता है, किन्तु इससे गेयता में बाधा उत्पन्न नहीं होतां सबसे प्रमुख बात जो हमारा ध्यान आकर्षित करती है, वह 'टेक' हैं 'टेक' को शास्त्रीय संगीत की शब्दावली में स्थाई कहते हैं 'टेक' पद की आवृत्ति पंथी गीत में बार–बार होती हैं गायन के बीच में 'सत्यनाम –सत्यनाम 'सत्यनाम सत्य है'' आदि शब्दों का उच्चारण दीर्घ बनाते हैं, लय प्रधानता के कारण पंथी गीतों का गायन समूह में होता हैं 2. पंथी गीत अपनी विशिष्टता के कारण छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में विशेष महत्वपूर्ण हैं छत्तीसगढ़ की पीड़ा एवं श्रद्धा के भावों का इनमें सुंदर समन्वय हुआ हैं पंथी गीत सतनामी सम्प्रदाय के जनों द्वारा गुरू घासीदास जी के जीवन चरित्र के गान हैं 3. लोक

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 7, Issue 12, November 2018
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

गीतों को गेयता विरासत में मिलती है, कंठ से उतरते हुए शब्द, भाव की धारा में अवगाहन करते हुए भाव को लय में सौरभ सहसा बिखरते हैं पंथी गीतों के साथ गेयता का प्रश्न बहुत कुछ स्वाभाविक भाव के साथ ही सुलझ जाता हैं गायन तो पंथी गीतों की साधना है, पंथी गीतों तो सरल भाव का सरल शब्दों में सहज गान ही हैं गेयत्व–विधान में पंथी गीत की सरलता, सूक्ष्मत, भावों की उच्चता, आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कोमलकांत पदावलियों के द्वारा पंथी गीतों की गेयता मुखर हो उठी हैं सरलता से भावों का गुंजन एवं गायन दोनों का इतना सुंदर सा मिश्रण हुआ है कि देखते ही बनता है –

धोई दीजे हो चुरोई दीजे हो
मोर मैली हे चुनरिया धोई दीजे हो
काहे के चुनरी काहेन कर साबुन्द
काटे के पथरा में धोई दीजे हो
यह तन चुनरी शब्द कर साबुन्द
ज्ञान के पथरा में धोई दीजे हो
चेला भई चुनरी गुरू भईगे साबुन्द
पांच नाम के पथरा में धोई दीजे हो
धोई–धोई कपड़ा गगन परमेलिया
नाम के अरवा भरोई दीजे हो
कहे गुरू घासीदास हंसा अरजाई के
सत गुरू के लोक पढ़ोई दीजे हों

उक्त गीत में अनुप्रासों की योजना, पुनरूक्ति आदि के माध्यम से भी वस्तुत्व एवं गेयत्व का सुंदर विधान हुआ हैं 4.

संदर्भ ग्रंथों की सूची–

1. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन– दयाशंकर शुक्ल, पृष्ठ –117,118
2. छत्तीसगढ़ के सामाजिक जीवन पर गुरू घासीदास का प्रभाव डॉ. पदमा डड़सेना, पृष्ठ–98
3. छत्तीसगढ़ के पंथी गीत और बाबा गुरू घासीदास–श्रीमती सुप्रभा झा,पृष्ठ–31वहीं, पृष्ठ–62,63